पंजीयन क्र . 26996

संस्था आरोग्य

शुरूआत

अक्टूबर 1995 में संस्था की शुरूआत सामाजिक उत्थान के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के उद्देश्य से हुई। जीवन में खासतौर पर समाज के गरीब और कमजोर तबके के लोगों के बीच उनके हितों के लिए काम करने के उद्देश्य से विशेषकर ग्रामीण विकास, महिलाओं और बच्चों के हित में उनके जीवन, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि आधारभूत आवयश्कतों से संबंधित विषयों को लेकर। आज भी संस्था अपने इसी लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रही है।

संस्था की पहुंच

संस्था प्रमुखतः म.प्र. एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में कार्यरत है और उसका पंजीकृत कार्यालय भोपाल एवं मुख्यालय दिल्ली में स्थित है।

लक्ष्य

राज्य और राष्ट्र स्तर पर कमजोर वर्गों, विशेषकर महिलाओं और बच्चों के हित में कार्य ही संस्था का लक्ष्य है। विशेषकर स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार उन्मूलक क्षेत्रों में। संस्था ऐसा अनुभव करती है कि लोगों में अगर जानकारी है तो वह एक दिन जरूर उनका जीवन बदल देगी इसी विचार को लेकर संस्था शिक्षा, स्वास्थ्य और जीवन विकास के क्षेत्रों में कार्यरत है। प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य जैसे आज की जरूरत के क्षेत्र में भारत सरकार के सहयोग से भोपाल जिले में कार्यरत है।

हमारी विचारधारा

मौजूदा प्रयासों को और सफल बनाना यही हमारी विचारधारा का मुख्य लक्ष्य है। समाज के विभिन्न वर्गों, कमजोर तबकों, महिलाओं और बच्चों के हित में विशेषज्ञों की देख-रेख में शासन और समाजसेवी संस्थाओं द्वारा चलाया जा रहा है। विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़ने के लिए संस्था सदैव तत्पर रही है।

सूचना, शिक्षा, संचार

संस्था का अदम्य विश्वास है जानकारी लोगों का जीवन बदल सकती है। इसी विश्वास और विचारधारा के साथ हम पिछले लगभग 12 वर्षों से समाज के कमजोर तबकों के बीच कार्यरत है। विशेषकर ग्रामीण विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में। बात चाहे बच्चों के पोषण की हो या उनके सही विकास की। बात चाहे लिंगभेद की हो या बालिका शिक्षा की। हमारा विश्वास है समाज सही जानकारी से सही दिशा में अग्रसर हो सकता है और इसी को लेकर हम कार्यरत है। समाज में बदलाव के उद्देश्य को लेकर आम आदमी तक इसकी जानकारी पहुंच सके इस हेतु सूचना, शिक्षा, संचार माध्यमों को बढ़ावा देना एवं उनको आम जनों तक पहुंचाना है।

मातृ एवं शिशु जीवन के लिए समर्पित

मातृ शिशु जीवन के लिए विशेष रूप से कार्यरत हैं। यह बात अजीब लग सकती है पर जब बात मृत्युदर एवं शिशु मृत्युदर की आती है तब बहुत पिछड़ा हुआ लगता है। हमें विश्वास है कि बालिका शिक्षा पर अगर प्रदेश में ध्यान देंगे तो मातृ मृत्युदर एवं शिशु मृत्युदर पर निश्चित इसका प्रभाव धनात्मक होगा। संस्था के इसके लिए अपने स्तर पर प्रयासरत है।

बच्चों तक पहुंच

हमारा विश्वास है कि बच्चे बहुत तेजी से सीखते हैं और जो उन्हें बताया जायेगा उसे अमल में लाने में देरी नहीं करते इसलिए हम आंगबाड़ियों और स्कूलों के माध्यम से बच्चों तक पहुंचकर उनके बीच शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्यरत हैं।

शिक्षा और स्वास्थ्य

यही हमारी सामाजिक प्राथमिकता है और अंतिम क्षण तक संस्था इसके लिए कार्य करती रहेगी। हम सोचते हैं शिक्षा एवं स्वच्छता स्वास्थ्य की कुंजी है।

ग्रामीण विकास

आज भी भारत का ज्यादातर हिस्सा गांवों में बसता है ओर उनके सामाजिक एवं आर्थिक विकास के प्रयासों में संस्था निरंतर प्रयासरत है। संस्था ग्रामीण विकास के सभी जरूरी पहलुओं जैसे रोजगार गांरटी योजना, जलाभिषेक अभियान, समग्र स्वच्छता अभियान, जलग्रहण क्षेत्र प्रबंधन मिशन, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना, मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम, स्कूल चलें हम, नंदन वन आदि योजनाओं के कार्ययोजना निर्माण, प्रचार-प्रसार एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत है।

आरोग्य जन कल्याण संस्था

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन

2004–05

समग्र स्वच्छता

भोजवेटलेन्ड एवं आरोग्य जन कल्याण संस्था के संयुक्त प्रयासों से भोपाल की छोटी एवं बड़ी झील में सफाई अभियान चलाया गया। संस्था द्वारा पूरे माह के अथक प्रयासों से क्षेत्र में झील की साफ सफाई के लिए जनभागीदारी से कार्य किया गया एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्था द्वारा सभी को साफ-सफाई का महत्व समझाया एवं स्वयं तथा आसपास की सभी चीजों एवं क्षेत्र को स्वच्छ बनाये रखने की अपील की। संस्था द्वारा समग्र स्वच्छता अभियान के अंर्तगत शौचालयों का उपयोग, गंदे पानी की निकासी, मल-जल की निकासी, स्वच्छ पानी का उपयोग, स्वयं की साफ-सफाई, सभी घरों में शौचालयों का निमार्ण एवं स्वच्छता के महत्व को जनसाधारण में जागरूकता अभियान चलाया। प्रचार प्रसार एवं अन्य सभी प्रकार के संसाधनों द्वारा आम जनता को इससे जोड़ने के लिए प्रयासों पर विचार किया गया।

जनभागीदारी सुनिश्चित करने के लिए परियोजना से जुड़ी संस्था की रणनीति इस प्रकार है :-

1. अपने घर का कूड़ा कचरा इधर-उधर रास्ते में या नालियों में न डालकर नगर निगम द्वारा निर्धारित स्थान पर ही डालें।

2. अपने शौचालय सीधे नालियों में न खोलें और न ही अपने बच्चों को सड़क किनारे या नालियों पर शौच के लिए बैठायें।

3. घरेलू सीवर लाइनों को उनके क्षेत्र से गुजरने वाली मुख्य सीवर लाइन से जोड़ें।

4. अपने मोहल्ले में बने सुलभ शौचालय का उपयोग करें और यथाशीघ्र निजी शौचालय बनवायें।

5. प्लास्टिक की पन्नियों का कम से कम उपयोग करें और उन्हें खुले स्थान या नालियों में न फेंककर एक जगह इकठ्ठा कर लें और पन्नी बीनने वाले को दे दें या बेच दें।

6. नलों से पानी व्यर्थ न बहनें दें और उसका किफायत से उपयोग करें।

7. पानी को गड्डों में न भरने दें।

8. तालाबों के तटीय क्षेत्रों पर स्थित धार्मिक स्थलों पर पूजा सामाग्री/पालीथिन आदि को तालाब में न बहने दें।

स्व-सहायता समूह

संस्था द्वारा प्रदेश के कई जिलों में स्व-सहायता समूहों को स्वावलंबी एवं आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये हैं। संस्था द्वारा सेनेटरी नेपकिन निमार्ण, अगरबत्ती, मोमबत्ती, जेल मोमबत्ती, खिलानों, अचार, पापड़, जूट एवं अन्य प्रशिक्षणों के लिए जिला भिण्ड, जिला दमोह, जिला अशोकनगर, जिला सतना में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये एवं प्रशिक्षणोपरांत निर्माण इकाइयों एवं कच्ची निर्माण सामाग्री का वितरण किया। संस्था द्वारा सभी स्व-सहायता समूहों को निमार्ण, विपणन एवं प्रबंधन के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। दूरगामी व्यवसायिक योजना तैयार कर कार्यशैली के विकास की योजना बनाई। जिले की सभी जनपद पंचायतों में संस्था द्वारा मुख्य रूप से अशिक्षित/अर्द्धशिक्षित महिलाओं/पुरूषों के मध्य कार्य कर कार्य कर उन्हें प्रशिक्षित किया जाता रहा है। क्षेत्रीय संसाधनों/स्त्रोतों को तलाश कर उनके दोहन हेतु महिलाओं/पुरूषों में प्रशिक्षण के माध्यम से कौशल उन्नयन कर उन्हें आय उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

साथ ही संस्था सामुदायिक भागीदारी, सहयोग समन्वय के साथ विकास करने की भावना भी जगाने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही साथ महिलाओं/पुरूषों में समूह भावना जागृत कर उन्हें सामूहिक रूप से बचत के लिए भी प्रोत्साहित किया जा रहा है एवं संस्था के द्वारा जिन शहरी एवं कई ग्रामीण क्षेत्रों में इन उद्देश्यों को लेकर कार्य किया गया है उसमें सफलता का प्रतिशत सर्वाधिक है।

संस्था द्वारा इंदिरा गांधी गरीबी हटाओ परियोजना के राज्य मुख्यालय एवं जिला कार्यालय के सहयोग से पूरे गुना जिले के लिए विस्तृत कार्ययोजना तैयार की है।

उपरोक्त प्रशिक्षणों के अतिरिक्त भी संस्था द्वारा क्षेत्रीय स्त्रोतों की उपलब्धि एवं बाजार की उपलब्धता का अध्ययन कर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्राथमिकता निर्धारित कर प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया है।

किसी भी आय उत्पादन एवं स्वरोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण प्रारंभ करने के पूर्व यह जांच किया जाना अत्यंत आवश्यक है कि उस क्षेत्र में अच्छी सामाग्री की उपलब्धता कितनी है एवं तैयार सामाग्री के विक्रय हेतु बाजार उपलब्ध है या नही।

संस्था द्वारा उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों का अध्ययन किया गया एवं कुछ ऐसे व्यवसायों का चयन किया गया है जिनका उपयोग ग्रामीण एवं नगरीय दोनो ही क्षेत्रों में संभव है।

पोषण आहार सप्ताह

संस्कार-शिक्षा-समिति एवं आरोग्य के संयुक्त प्रयासों से चलाई जा रही प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य परियोजना के अन्तर्गत समस्त 100 ग्रामों में पोषण आहार सप्ताह मनाया गया। चूंकि प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य के साथ उचित पोषण आहार भी इसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा या अंग है। पोषण आहार सप्ताह के अंतर्गत संस्था के सचिव तथा समन्वयक द्वारा विभिनन ग्रामों में महिला एवं युवा बैठक सम्पन्न की जिसके मुख्य अंश या झलकियाँ इस प्रकार हैं :-

संस्था के सदस्यों द्वारा इस सप्ताह में मुख्य रूप में गर्भवती एवं शिशुवती माताओं का आहार तथा शिशु पोषण इत्यादि पर विस्तत रूप से जानकारी दी उन्होंने बताया कि गर्भवती माता को गर्भावस्था के दौरान उचित मात्रा में आहार लेना चाहिए क्योंकि अब यह उसका मामला ना होकर उसकी कोख में पल रहे शिशु का भी है। चूंकि उसके विकास का तथा व्यवस्था का सारा संबंध माँ के पोषण एवं स्वास्थ्य से है। यदि मॉ स्वस्थ होगी तो बच्चा भी और यदि मॉ सुपोषित होती तो बच्चा भी सुपोषित होगा तथा स्वस्थ होगा गर्भावस्था में या उसके दौरान माता या शिशु की मृत्य उचित पोषण आहार की कमी के कारण होती अतः एक गर्भवती स्त्री के आहर में 6 चपाती 1 कटोरी चावल 2 कटोरी दाल तथा कम से कम प्रतिदिन 200 ग्राम हरी पत्तेदार सब्जी तथा एक मौसमी फल साथ ही हो सके तो एक गिलास दूध अवश्य देना चाहिए, जिससे सारे विटामिन तथा खनिज तत्वों को उचित मात्रा में माता को मिलना उसके पोषण का हिस्सा है। दूध से उसकी तथा उसके बच्चे की हडिड्याँ मजबूत होगी, जिससे उसको संबल एवं मजबूती प्रदान करेगा। इसी प्रकार गर्भावस्था के दौरान 100 गोलियाँ आयरन फोलिक एसिड की तथा 100 गोलियां कैल्सियम की लेना भी आवश्यक है, जिससे उसके शरीर में यदि कुछ कमी हो तो वह पूरी हो जाये। इसी प्रकार जब प्रसव सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाये तो भी माता को संपूर्ण आहार प्रदान करते रहना चाहिए, जिससे उसके दूध से पल रहा बच्चा स्वस्थ रहे तथा उसके उचित मात्रा में स्तनपान करा सके तथा बच्चा भूखा न रहे। इसी प्रकार बच्चे को भी 4 माह तक माता के दूध के अलावा किसी अन्य आहार की आवश्यकता नहीं है यदि उसके तथा उसकी वृद्धि के लिए संपूर्ण आहार है चार माह पश्चात बच्चे के कोई दूसरा पूरक आहार प्रदान करना चाहिए बच्चा बीमार ही क्यों न हो उसे स्तनपान कराते रहना चाहिए स्तनपान से उसके अंदर रोग से लड़ने की क्षमता उत्पन्न होती ही तथा वह जल्दी ही स्वस्थ होता है साथ ही गर्भवती माता को दिन में विश्राम करना काफी आवश्यक है सारे सप्ताह समस्त 100 ग्रामें में इन बातों का प्रचार-प्रसार किया गया।

विश्व स्वास्थ्य-दिवस

संस्था द्वारा विश्व स्वास्थ्य-दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन के अन्तर्गत महिला एवं युवा मंडल की संयुक्त बैठक रखी गई साथ ही स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया। सर्वप्रथम संस्था द्वारा उपस्थित समुदाय को सचिव ने बताया कि स्वास्थ्य से तात्पर्य रोग का अभाव ही नहीं बल्कि पूर्ण रूप से मानसिकता से यामानसिक एवं सामाजिक परिवेश की संतुष्टि है यदि व्यक्ति भौतिक या शारीरिक रूप से स्वास्थ्य है तथा मानसिक दबाव है या सामाजिक मान्यता नहीं हो तो उसे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा, साथ ही स्वास्थ्य शरीर में ही स्वास्थ्य मन का निवास होता है। स्वास्थ्य शरीर एवं मन मिलकर ही एक स्वास्थ्य समाज का निर्माण कर सकते हैं, जब तक व्यक्ति स्वास्थ्य नहीं होगा तब तक समृद्ध नहीं हो पायेगा। स्वास्थ्य एवं समृद्ध एक दूसरे के सम्पूरक हैं। तत्पश्चात् श्री आर.डी. मिश्रा (चिकित्सक) द्वारा बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ बच्चा ही स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ प्रदेश का निर्माण कर सकता है, बच्चे हमारी धरोहर है इन्हें संरक्षित करना हमारा कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक शिशु का प्रथम अधिकार उसके माता के दूध पर है, उसे जन्म के तुरंत बाद स्तनपान कराना काफी आवश्यक है। यह कई रोगों से बच्चे का बचाव करता है तथा इसके पश्चात् उसे सभी टीके लगवाये जाये, जिससे उसे 6 जानलेवा बीमारियों से बचाव हो सके जैसे काली खांसी, गलघोंटू, खसरा, टिटनेस, तपेदिक, पोलियो साथ ही 6 माह तक उसे अन्य अतिरिक्त आहार के स्थान पर माता का दूध ही दें, यह संपूर्ण पोषण प्रदान करता है। 6 माह पश्चात् बच्चे को पूरक आहार प्रदान किया जाये, जैसे- मसला केला, चावल, दाल का पानी तथा जूस इत्यादि तथा गर्भवती माता को गर्भावस्था में संपूर्ण आहार तथा टी. टी. के टीके के साथ ही प्रतिदिन एक घंटा आराम आवश्यक है साथ ही स्वास्थ्य केन्द्र या स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा तीन बार स्वास्थ्य जांच आवश्यक है तत्पश्चात् उपस्थित समुदाय के लोगों को स्वास्थ्य जांच आवश्यक है तत्पश्चात् उपस्थित समुदाय के लोगों को स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाईयों का वितरण किया इसके पश्चात् कार्यक्रम का आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापान किया।

पल्स पोलियो अभियान, स्तनपान सप्ताह

संस्कार-शिक्षा-समिति एंव आरोग्य के संयुक्त तत्वावधान में चलाई जा रही प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य परियोजना के अन्तर्गत वर्ष 99 से वर्ष 2005 के 6 वर्ष के मध्य चलाए गए विशेष पल्स पोलियो अभियान का संचालन संस्था द्वारा तथा संस्था द्वारा बनाये गये मंडलों (युवा एवं महिला) द्वारा कार्यक्रमों में बढ़-चढ़ कर सहयोग किया तथा समस्त ग्रामों में इस पोलियो के अभियान के बारे में प्रचार-प्रसार कर वहां की जनता को इस बीमारी एवं इस अभियान से अवगत कराया संस्था के कार्यकर्ताओं तथा कोऑर्डिनेटर द्वारा प्रत्येक ग्राम के मंडलों की बैठक सम्पन्न कर उन्हें पोलियो की बीमारी के बारे में सविस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि यह बीमारी न ही कोई दैविक प्रकोप है न ही कोई पूर्व जन्म में किये गये कार्यों का परिणाम यह तो सिर्फ जन्म के समय टीका लगवाने में की गई भूल का परिणाम है। जिसके फलस्वरूप सारा जीवन नष्ट हो गया, हमें इस गलती को दोहराना नहीं चाहिए, हमें आज इस चीज की शपथ लेनी चाहिए कि आज के बाद हमारा ग्राम तथा समाज पोलियो मुक्त हो तथा सरकार द्वारा चलाये जा रहे राष्ट्रीय कार्यक्रम को सफल बनाना हमारा ध्येय होना चाहिए।

संस्कार-शिक्षा समिति एवं आरोग्य के संयुक्त तत्वाधान में चलाई जा रही प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य परियोजना के अन्तर्गत समस्त ग्रामों में स्तनपान सप्ताह का आयोजन किया गया। इस सप्ताह के अन्तर्गत समस्त ग्रामों में महिला एवं युवा मंडल के सहयोग से ग्रामों में स्तनपान विषय पर बैठक का आयोजन किया। इसी सप्ताह के कार्यक्रमों के मुख्य अंश एवं झलकिंयाँ इस सप्ताह के अंतर्गत समस्त मंडलों को स्तनपान की विशेषताओं से अवगत कराया गया जैसे कि जन्म के तुरंत बाद नवजात शिशु को माता का स्तनपान कराना काफी आवश्यक है इसके कराने से बच्चे के अंदर कई रोगों से लड़ने की क्षमता उत्पन्न हो जाती है। माता के प्रथम दूध में 'कोलस्ट्रम' नामक पदार्थ पाया जाता है, जिससे बच्चे के अंदर रोग से लड़ने की क्षमता उत्पन्न होती है तथा बच्चा स्वस्थ रहता है, परंतु बच्चे को माता का दूध 4 माह तक बिना किसी अवरोध के पिलाना आवश्यक है, इस दौरान किसी अन्य पूरक आहार की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि माता का दूध 4 माह तक बच्चे के लिए सर्वोत्तम आहार है। 4 माह उपरांत बच्चे को अन्य अतिरिक्त या पूरक आहार प्रदान कर सकते हैं। 4 माह उपरांत यदि बच्चा बीमार भी होता है तो बच्चे को दवाओं के अतिरिक्त माता का दूध अवश्य पिलाते रहना चाहिए। माता का दूध बंद नहीं करना चाहिए, जिससे बच्चे के अंदर जल तथा आहार की मात्रा उचित मात्रा में रहती है तथा स्वस्थ होने में विलंब नहीं होता। यदि उस समय स्तनपान बंद कर दिया जाये तो बच्चे की स्थिति सुधार में विलंब होता है तथा वृद्धि तथा विकास में बाधा उत्पन्न होती तथा उपस्थित तत्वों की क्षतिपूर्ति में काफी विलंब होता है। 4 माह का स्तनपान बच्चे को सारी उम्र की मजबूती प्रदान करना है। ग्रामें में अत्यधिक जगह प्रचलन नही है अतः इस आदत को निरंतरता प्रचलन में लाना काफी आवश्यक है साथ ही माता को उचित आहार लेना आवश्यक जिससे बच्चे को स्तनपान में बाधा न आए।

नारी जागरूकता, साक्षारता अभियान

आरोग्य संस्था द्वारा बनाये गये महिला मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य रूप से संस्था की अध्यक्षा तथा सचिव उपस्थित थे। कार्यक्रम का संपूर्ण आयोजन महिला मंडल द्वारा किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में संस्था की अध्यक्षा द्वारा महिला दिवस के बारे में उपस्थित समुदाय को बताया कि आज इस विश्व में इतनी बुरी स्थिति आ चुकी है कि हमें मानव होते हुए भी मानवों द्वारा हमोर जीते जी हमारा दिवस मनाया जा रहा। महिला दिवस मनाना कोई हमारे लिए सौभाग्य की बात नही है, बल्कि यह एक शर्म की बात है कि आज वह स्थिति आ चुकी है कि हमें अपने बारे में सोचने के लिये वर्ष में एक बार एक दिवस का आयोजन करना पड़ता है। आज भी लाखों महिलाएँ ऐसी हैं, जिन्हें यह नहीं पता कि महिला दिवस होता क्या है, उनकी तो रोजमर्रा की जिंदगी ही महिला दिवस है। मैं जानती ही नहीं और आज के दिन भी कहीं न कहीं किसी न किसी महिला पर अत्याचार हो रहे होंगे। ऐसा दिवस किस काम का, तत्पश्चात् संस्था के सदस्यों द्वारा इस दिवस के अवसर पर महिलाएँ के लिए चलायी जा रही विभिन्न योजना की जानकारी विस्तार से देते हुए उन्होंने कहा कि शासन द्वारा गर्भवती महिला को 4 माह तथा पोषण आहार देने की व्यवस्था की गई है तथा गर्भावस्था में प्रसव के दौरान 150 रू. अतिरिक्त का प्रावधान भी किया गया है तथा कामकाजी महिलाओं का गर्भावस्था अवकाश में 2 माह से बढ़ाकर 4 माह कर दिया गया है तथा महिला एवं बाल विकास पंचायत के सहयोग से इन योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। इन्होंने बताया कि शासन द्वारा एक नई योजना का भी शुभारंभ किया है, जिसमें कोई महिला यदि सालाना 180 रू. की बचत करती है तो शासन उसे 150 रू. अतिरिक्त प्रदान करेगा, परन्तु इन समस्त योजनाओं की जानकारी के लिए महिला को साक्षर तथा सबल बनाना पड़ेगा तभी इनका लाभ उन तक पहुंच पायेगा। तत्पश्चात् संस्था समन्वयक द्वारा महिला शिक्षा पर प्रकाश डाला उन्होंने बताया कि शासन द्वारा बालिका शिशु के जन्म पर 500 रू. की वार्षिक सहायता का प्रावधान किया गया है, साथ ही बालिका को उच्च शिक्षा के स्तर में भी छूट का प्रावधान किया गया है तथा हाई स्कूल स्तर तक की शिक्षा बिना किसी पैसे के निःशुल्क का प्रावधान भी है। इसके पश्चात् सचिव द्वारा उपस्थित समुदाय का आभार प्रकट कर कार्यक्रम का समापन किया।

संस्था द्वारा म. प्र. शासन के द्वारा नई कार्य योजना के हिसाब से दमोह जिले में सर्व शिक्षा अभियान के स्कूल चलें हम कार्यक्रम में सम्पूर्ण जिले में प्रचार प्रसार का कार्यक्रम कमिश्नर सागर संभाग, कलेक्टर, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एवं जिला शिक्षा समन्वयक के मार्गदर्शन में पूरा किया। इस प्रचार प्रसार अभियान का मुख्य उद्देश्य 5 से 14 आयु वर्ष के शाला त्यागी बालक-बालिकाओं को स्कूल में नामांकन कराने के लिए प्रेरित करना एवं जिले में कोई भी बच्चा छूट ना जाये इसके लिए सक्रिय भागीदारी पैदा करना था। इस कार्यक्रम में सभी विकासखंड समन्वयकों, सरपंचों एवं शिक्षाकर्मियों को जोड़ा गया। इस प्रचार अभियान में सम्पूर्ण मध्यप्रदेश में केवल आरोग्य जन कल्याण संस्था का चयन समाज सेवी संस्था के रूप में किया गया। जिले के सभी विकासखण्डों, तहसीलों एवं सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में नुक्कड़ नाटकों का मंचन, गीत संगीत, वीडियो वेन से प्रचार प्रसार, कला जत्थों का प्रर्दशन एवं उच्च श्रेणी की प्रचार-प्रसार सामाग्री का निमार्ण संस्था द्वारा कराया गया। इस पूरे अभियान में कमिश्नर सागर संभाग द्वारा स्वयं सभी कार्यों का जायजा लिया एवं प्रयास की सराहना की।

संस्था द्वारा ग्राम पिपलीया हसनाबाद में साक्षरता दिवस का आयोजन स्थानीय महिला मंडल द्वारा सम्पन्न किया। इस कार्यक्रम में संस्था सचिव एवं समन्वयक उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में संस्था के समन्वयक द्वारा उपस्थित समुदाय को साक्षर होने के लाभों के बारे में विस्तार से बताया तथा शासन द्वारा चलाये जा रहे राजीव गांधी शिक्षा मिशन एवं प्रौढ़ शिक्षा मिशन के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि हमें अपने छोटे बच्चों को आज ही साक्षरता अभियान के तहत् पंजीकृत करवा कर उन्हें विद्यालय भेजा जाये साथ ही जो व्यक्ति बड़ी उम्र के हैं, वे रात्रि में थोड़ा समय निकाल कर प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों में अध्ययन कर अपना ज्ञानवर्धक करें। तत्पश्चात् सचिव द्वारा बताया गया कि यदि आज आप हमारे प्रदेश के लोग पूर्ण साक्षर होते तो हमारा कोई भी शोषण नहीं कर सकता तथा शासन द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों का लाभ हमें पूर्ण रूप से प्राप्त होता। आज अज्ञानवश शासन की नीतियों को समझ नहीं पाते तथा उनका लाभ प्रापत नहीं कर सकते। असाक्षरता के कारण हम अपने तथा अपने बच्चां को स्वास्थ्य भी पूर्ण रूप से हम संरक्षित नहीं कर पाने तथा अज्ञानवश नीम हकीमों के चक्कन में पड़कर हम अपनी सारी जिंदगी दाव पर लगा देते हैं। यदि हम साक्षर होंगे तो स्वस्थ भी होंगे और स्वस्थ होंगे तो ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर पायेंगे। तत्पश्चात् समन्वयक द्वारा आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया।

एड्स-नशामुक्ति

आरोग्य जन कल्याण संस्था एक स्वैच्छिक गैरसरकारी संगठन है। संगठन मध्यप्रदेश में वर्ष 1995 से निरन्तर नशामुक्ति, एड्स नियंत्रण इत्यादि सामाजिक कार्यों में कार्यरत है। संगठन नशामुक्ति सम्बन्ध में जनजागरण, परामर्श, उपचार व पुनर्वास इत्यादि सभी स्तरों पर कार्यरत है। व्यसनमुक्त समाज का निर्माण करना यही संगठन का सपना है।

(1) डॉ. अम्बेड़कर जयन्ती 14 अप्रैल 2005 को डॉ. बाबा साहब अम्बेड़कर जयन्ती के उपलक्ष्य में संगठन ने शहर के झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्रों में एड्स-नशामुक्ति जनजागरण, चित्र-प्रदर्शनी का आयोजन किया। इस प्रदर्शनी का लाभ करीब 3000 स्त्री-पुरूषों ने उठाया।

दूरदर्शन के साथ-साथ सायंकालीन प्रचार सभाओं का भी अयोजन किया गया। डॉ. अम्बेड़कर का मानना था कि नशीली चीजों का उत्पादन और व्यापार दलित, शोषित व पीड़ित जनता के विरोध में किया गया षड़यंत्र है। गरीबी और पिछडेपन से छुटकारा पाने के लिए नशाखोरी को समाप्त करना आवश्यक है।

(2) बुद्ध पूर्णिमा - बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर सद्भाव नशामुक्ति केन्द्र में बुद्ध के विचारधारा पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। भगवान बुद्ध के विचार दुःख और अशांति से मुक्ति पाने के लिए उपयोगी सिद्ध होगें।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय (विश्व) नशा विरोधी दिवस - दिनांक 26 जून को विश्व नशा विरोधी दिवस के अवसर पर नशामुक्ति रैली का आयोजन किया गया। एन.एस.एस.तथा अन्य छात्र संगठनों को लेकर एक दिवसीय नशा विरोधी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 320 छात्र-छात्राओं तथा 20 शिक्षकों ने सहभाग दिया।

(4) महात्मा गांधी जयन्ती व व्यसनमुक्ति सप्ताह- महात्मा गांधी नशामुक्ति के प्रबल पक्षधर थे । उन्होंने अपने रचनात्मक कार्य में शराबबंदी का कार्य सबसे उपर रखा था । गांधी जी का पुण्य स्मरण करते हुए 2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर तक संगठन ने व्सनमुक्ति सप्ताह का आयोजन किया था । 2 अक्टूबर को सुबह 8 बजे सभी स्कूलों के विद्यार्थी नगर में एकत्रित हुए । महात्मा गांधी के चित्र पर माल्यार्पण कर सभी छात्रों ने नशामुक्ति की शपथग्रहण की । अंत में नशामुक्ति रैली आरंभ हुई । छात्र-छात्राऐं नशा विरोधी नारे लगाते हुए और हाथ में तख्तियॉ लेकर चल रहे थे ।

(5) व्यसनमुक्ति महिला परिषद - 1 व 2 नवम्बर को संस्था के तत्वाधान में व्यसनमुक्ति महिला परिषद का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस परिषद में करीब 340 महिलाओं ने भाग लिया । घर की महिला अगर जागृत रहे तो परिवार नशें से दूर रहेगा। महिलाओं को जागृत एवं संगठित कर नशें के विरोध में दीर्घकालीन लड़ाई लड़नी होगी।

(6) व्यसन प्रतिबंधात्मक स्कूल शिक्षा कार्यक्रम-संस्था के तत्वाधान में शहर के करीब 100 से अधिक स्कूलों में निरंतर पिछले तीन वर्षो से व्यसन प्रतिबंधात्मक शिक्षा कार्यक्रम संचालित हो रहा है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 8 से कक्षा 12 के सभी विद्यार्थियों को तथा उनके शिक्षकों को व्यसन प्रतिबंधात्मक प्रशिक्षण दिया गया। कुल 500 टीचर्स तथा 50,000 छात्रों ने इसका लाभ उठाया । प्रत्येक स्कूल में व्यसन मुक्ति शपथ तथा नशा विरोधी नारे दीवारों पर लिख दिये हैं।

विद्यार्थियों के लिये प्रश्न-मंत्र, निबंध, स्पर्धा, भाषण स्पर्धा इत्यादि का आयोजन भी किया गया । स्कूली छात्रों ने 2 अक्टूबर तथा 30 जनवरी को रैली में सहभाग देकर जनजागरण कार्य में बढ़-चढ़कर भागीदारी दी ।

(7) काऊंन्सिलिंग सुविधा- संस्थो के तत्वाधान में शहर के भिन्न-भिन्न हिस्सों में काऊन्सिलिंग सुविधा दी जा रही है । अरेरा कॉलोनी, शाहपुरा, नारियलखेड़ा, बरेला गांव, लालघाटी, कोहेफिजा, ईदगाह हिल्स, कैंची छोला आदि क्षेत्रों में नियमित रूप से परामर्शदाता जाकर काऊन्सिलिंग सुविधा प्रदान करते हैं।

प्री-ट्रीटमेंट काऊन्सिलिंग का लाभ उठाकर कई नशा पीड़ितों को नशामुक्ति केन्द्र में भरती कराने हेतु प्रयास किया जाता है । इसी के साथ फैमिली काऊन्सिलिंग तथा फॉलोअप का कार्य भी किया जा रहा है ।

(8) पुर्नवास कार्यक्रम (रिहेबीलेशन)- व्यक्ति व्यसनमुक्त होने के बाद उसका सामाजिक पुर्नवास होना आवश्यक है। पुर्नवास न होने पर या ठीक से न होने पर वह दोबारा नशे की ओर चला जाता है । वैवाहिक, व्यवसायिक और कानूनी दृष्टि से पुर्नवास किया जाता है।